हास्य व्यंग्य के कुशल चितेरे 'अशोक चक्रधर'

बीज शब्द : *अशोक चक्रधर, हिन्दी हास्य-व्यंग्य*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

डॉ० मनीषा गुप्ता
हिन्दी प्रवक्ता
जी0एस0एच0पी0जी0 कालेज
चान्दपुर स्याऊ

अशोक चक्रधर सिर्फ उस व्यक्ति का नाम नहीं है, जो दक्षिण दिल्ली की सरिता बिहार नामक कालोनी में रहता है और जामिया मिल्लिया इस्लामिया में हिंदी पढ़ाता रहा है। अशोक चक्रधर सिर्फ उस व्यक्ति का नाम भी नहीं है, जो देश-विदेश के कवि सम्मेलनों के लिए जरूरी कवि है और 'कहकहे' से लेकर 'रंग-तरंग' तक टी.वी. पर मौजूद रहता है। अशोक चक्रधर सिर्फ उस व्यक्ति का नाम भी नहीं है, जो संगीत में गहरी पैठ रखता है और एक अच्छा गायक है। अशोक चक्रधर सिर्फ उस व्यक्ति का नाम भी नहीं है, जो कि एक अच्छा चित्रकार है। कितनी ही प्रदर्शनियों में उसके बनाए हुए चित्र और पोस्टर लगाए जाते हैं। वास्तव में अशोक चक्रधर अनेक प्रकार की प्रतिभाओं के समुच्चय का नाम है। अलग-अलग क्षेत्रों में उसने जो किया, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण काम यह किया कि उसने मंचीय हास्य-व्यंग्य को नए आयाम दिए।'

उपर्युक्त परिच्छेद अशोक चक्रधर की बहुआयामी प्रतिभा एवं उनके व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करता है। चक्रधर जी में बाल्यकाल से ही कविता के प्रति रुचि रही है। युवाकाल संघर्षरत व्यतीत होने पर भी उन्होंने साहसपूर्वक प्रगति की। वे अपने अनुभवों के आधार पर जीवनमूल्यों को स्थान देते रहे हैं। उनमें समय को पछाड़ने की अपूर्व शक्ति है। वे महकते हुए गुलाब की भाँति हैं। जिस प्रकार गुलाब अपने सौंदर्य एवं सुगंध से सम्पूर्ण बगिया महका देता है, उसी प्रकार वे भी लेखनी रूपी गुलाब द्वारा समग्र समाज को महका देते हैं। उनका हृदय दर्पण की भाँति पारदर्शी है। ऐसा दर्पण जिसमें दूसरों का दुःख, सुख, हँसी, दर्द आदि स्पष्ट दिखाई देता है। उनके चरित्र में सामाजिक व्यवहार, निजी सम्बन्धों का निर्वाह, दूरदृष्टि, निरंतर सृजनशीलता, परोपकार की भावना स्वाभिमान आदि बहुमूल्य रत्न हैं। उन्होंने अपने कार्य से सभी को प्रभावित किया। उनके विषय में डॉ0 कुँअर बेचैन जी का कथन है- 'अशोक चक्रधर ऐसी आँख है, जिससे कुछ छिपता नहीं, ऐसा वृक्ष है, जिसकी छाया में विश्राम और शांति मिलती है, ऐसा दरिया है, जिसकी लहरों पर हम अपने प्रयत्नों और सपनों की नाव सरलता से तैरा सकते हैं, प्रेम का ऐसा बादल है जो सब पर बरसता है, पसीने की ऐसी चमकदार बूँद है, जो श्रम-देवता के माथे की शोभा बढ़ाता है, ऐसी सुबह है, जिसके पास आकर नींद खुलती है, ऐसी नींद है, जो नए सपने जगाती है और ऐसा फूल है, जो हर पल महकता है, खिलता है और दूसरों के होठों को अपनी खिलखिलाहट देता है।

चक्रधर जी का मत है कि सभी प्रकार की पीड़ाएँ सहन की जा सकती हैं किन्तु मन की पीड़ा नहीं। उनका मोहभंग व्यक्तित्व के विखंडन तक पहुँच सकता था, यदि बागेश्री से उनका मोह का

ताना-बाना न जुड़ा होता। उनको लगा कि कोई एक है, जो केवल उनकी चिंताओं के लिए है। युवा सन्यासी अब राग बागेश्री गाने लगा। अशोक जी अलौकिक प्रतिभा के धनी, श्रेष्ठ कवि और सुधी साहित्य-सृष्टा, सजग शिक्षक और संगीत के प्रेमी हैं। वे कुशल फिल्म-निर्माता भी हैं, सुयोग पिता के यशस्वी पुत्र, कीर्ति पुरुष हैं। अपनी कविताओं में व्यंग्य के साथ सहज हास्य उत्पन्न कर व्यक्तियों को गुदगुदाने में चक्रधर जी सिद्धहस्त हैं। कविता-सृजन का गुण उन्हें विरासत में मिला है। उनके पिता स्वर्गीय राधेश्याम 'प्रगल्भ' देश के जाने-माने कवि थे। एक सुखद संयोग यह भी है कि वे प्रसिद्ध हास्यकवि काका हाथरसी के जामाता हैं। एक व्यक्ति दोनों ओर से कविता से घिरा हो तो वह कवि नहीं बनेगा तो क्या बनेगा।

वे खिलखिलाती क्रांति के अग्रदूत हैं। वे हास्यरस के प्रणेता हैं, हास्य-यज्ञ के उद्गाता हैं। उनको हास्य और व्यंग्य का सम्राट भी माना जाता है। विषय वैविध्य और कथन वैशिष्ट्य ही उनकी रचनाओं की महत्ता है। परिवेश के प्रति कवि की असीम और अनवरत सजगता उनकी व्यंग्य-रचनाओं में मूर्त हुई है। सामान्य असंगति को आम भाषा का प्रयोग करते हुए जन-जन तक पहुँचाने में चक्रधर जी समर्थ हैं। कभी अपने हास्य द्वारा वे पाठक या श्रोता को गुदगुदाते हैं तो कभी व्यंग्य द्वारा ताड़ना देते हैं।

कविवर अशोक जी यह मानते हैं कि विद्रूपता से ही हास्य उत्पन्न होता है। उन्हीं के शब्दों में 'वास्तव में हास्य उत्पन्न होता है विद्रूप से।' पहले हास्य-व्यंग्य के कवियों का निशाना मोटेलाला जी होते थे, काली झगड़ालू बीवी होती थी, अब राजनीतिक नेता होते हैं। नेता के व्यक्तित्व में सब तरह के विद्रूप समा जाते हैं और उन विद्रूपों की घुलनशीलता के पश्चात् एक अद्भुत-अपूर्व विद्रूप-सौंदर्य की सृष्टि होती है। फीता काटने से लेकर चमचों में फँस जाने तक आज का तथाकथित नेता समाज को जो विसंगतियाँ देता है, उससे थोड़ा-बहुत हँस लेने से अच्छा विरेचन हो जाता है। मोटी देह वाले थुल-थुल नेता जी थम्म से बैठें, फिर डगमगाते हुए खड़े हों, चलते-चलते किसी खम्भे से टकराए जाएँ, सिर पर गूमड़ उभर आए, वे केले के छिलके पर फिसल जाएँ, उनका चश्मा कीचड़ में सन जाए तो क्या आप इस पर शोक मनाएँगे... आप इस विद्रूप पर मात्र हँसेंगे। उसी हँसी के पीछे यह जीवन-तथ्य लगातार सक्रिय रहते हैं कि नेताओं ने जनता को कहाँ टकराया, कहाँ महँगाई बढ़ाकर अर्थव्यवस्था को डगमगाया, कहाँ-कहाँ पीड़ाओं के अृदश्य गूमड़ उभार दिए, कहाँ संस्कृति और संस्कार को कीचड़ में सान दिया।'

चक्रधर जी अपनी धारणा को इस प्रकार बताते हैं- 'व्यंग्य होता ही असर के लिए हैं। व्यंग्य असर न डाले तो सपाट अभिधा हो जाएगा। दोस्तोवस्की मानता था कि समाज में जब अपराध बढ़े तो समझो क्रांति होने वाली है। मैं मानता हूँ कि जब अधिक और तीखे व्यंग्य लिखे जाएँ तो समझो कुछ उलट-फेर होने वाला है।. ... देखिए उपदेशात्मक शैली तो नेताओं ने बेअसर कर दी, दूसरी ओर सहनशीलताएँ लगातार कम हो रही हैं, इसलिए सीधी-सीधी बात कहना आज खतरे में खाली नहीं है। आज की तिथि में संवाद की हास्य-व्यंग्य से परिपूर्ण शैली ही एक सीमा तक सहनीय शैली है। देखा नहीं है आपने मंच पर बैठे बड़े-बड़े दिग्गज नेता अपनी करतूतों पर लिखी व्यंग्य-कविताओं को कैसे मुस्करा-मुस्कराकर पचा जाते हैं।'

अशोक जी अपनी कविताओं की व्यंग्यात्मक शैली के सम्बन्ध में इस प्रकार कहते हैं- 'व्यंग्य तो परिणाम है और भावनाएँ प्रक्रिया। भावनाएँ भले ही आक्रोश या प्रेम या भय या करूणा अथवा वात्सल्य की हों, किन्तु इन कोमल भावनाओं की प्रक्रिया से जब आप निकलते हैं, तो धीरे-धीरे ये आपको कठोर निष्कर्षो तक पहुँचा देती है और वे निष्कर्ष आपको ऐसी शैली प्रदान करते हैं, जो आपकी कोमल भावनाओं की ही रक्षा करते हैं। व्यंग्य औजार भी हैं, औषधि भी, शिक्षा का एक माध्यम भी। संप्रेषण के लिए बहुत सशक्त शब्दावली को नियोजित करने का कौशल भी है। नैतिक उपदेशों या भाषणों के व्यंग्य से सरलतापूर्वक सामाजिक परिवर्तन करना सम्भव हो सकता है।' चक्रधर जी हास्य-व्यंग्य के शीर्षस्थ कवि हैं। हास्य-व्यंग्य को साहित्य के पृथक रूप में विकसित करने का श्रेय इनको जाता है।

आगे वे कहते हैं- 'व्यंग्य है एक भारी चीज। भारी जैसे लोहा। या कभी-कभी उससे भी भारी। जैसे- ब्लैक होल्स और हास्य है एकदम हल्की और फुसफुसी चीज जैसे सेमल के फूल, जैसे रूई पर हल्की और भारी ये दोनों चीजें बड़े अजीबोगरीब ढंग से जुड़ी हैं। भारी चीज में गति नहीं होती, हल्की अपने-आप उड़ती है। और अगर भारी पदार्थ में भी गति आ जाए तो मामला विलक्षण उपयोग का हो जाता है। मालगाड़ी में भारी-से-भारी माल लदकर जाता है। पटरियों पर दौड़ने वाले पहिए न हों तो माल टस-से-मस न हो।... यों समझिए कि मालगाड़ी पर लदा माल हैं व्यंग्य और पहिए हैं हास्य, जो उसे आसानी से गंतव्य तक पहुँचा देते हैं। हास्य और व्यंग्य का ये जो नया और मजबूत गठजोड़ है, यह कवि-सम्मेलन के मंच पर पहले नहीं था। पहले व्यंग्य के नाम पर थानेदार के निर्मम डंडे की लड़ियाँ थीं और हास्य के नाम पर सिर्फ फुलझड़ियाँ थीं। आजकल व्यंग्य हास्य से 'फुल' झड़ी बन गया है।... आज समाज में विसंगतियाँ अधिक हैं, विडम्बनाएँ और असमानताएँ अधिक हैं, इसलिए व्यंग्य की आवश्यकता बन गया है। व्यंग्य में मारक और उद्धारक क्षमता अधिक होती है।'

कविवर चक्रधर ने अपने व्यंग्यबाणों द्वारा करुणा भी दर्शायी है। उनको सामाजिक पीड़ा की अनुभूति भली-भाँति हैं। उन्होंने पीड़ा को कलम की शक्ति से जनता एवं समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। प्राणीमात्र के दुःख एवं मौन की गहराई से अनुभूति होना

साधारण व्यक्ति का कार्य नहीं। वे ऐसे व्यक्ति हैं, जो दूसरों के दु:खों का गहनता से अनुभव करते हैं। आत्मीय भाव ही मनुष्यों को उनके निकट लाता है। इन्होंने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से व्यक्तियों की दुखती रग पर हाथ रखा है। यहाँ तक कि मजदूर, श्रमिक, दलित, जमींदार, अनाथ, नारी, बेरोजगारी की मार झेलने वाला युवा, सिपाही या फिर कोई वृद्ध भिखारी हो, सामाजिक यथार्थ देखने के लिए उनके पास तीसरी दृष्टि एवं छटी ज्ञानेंद्रिय भी है। विभिन्न शीर्षकों पर कोई कवि तभी लिख सकता है, जब उसे समस्त बातों का अनुभव हो। ये सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक धार्मिक जगत के साथ अन्य विधाओं के भी ज्ञाता है। चक्रधर जी के विषय में डॉ0 हरीश नवल जी कहते हैं- 'अशोक पहले अपनी कविता में एक रूपक बाँधने का रोचक उपक्रम करते हैं, उसमें हास्य की बौछार करते हैं, फिर धीरे से एक पलीता व्यंग्य का लगाते हैं, धमाका होता है, धुआँ होता है और करुणा का साम्राज्य स्थापित होता है तथा एक त्रासदी रूप प्रकट होकर श्रोता या पाठक के मन को थपेड़े देने लगता है।' चक्रधर जी की लेखनी का सारा झुकाव जनजीवन की ओर है। उनकी लेखनी से उन पीड़ाओं की अभिव्यक्ति होती है, जिन्हें करोड़ों व्यक्ति सदियों से भोग रहे हैं। उनका लक्ष्य मात्र हँसाना ही नहीं रहा। उनकी रचनाओं में गम्भीर सामाजिक चिंताओं के दर्शन होते हैं।'

उन्होंने जन-जन को जागरुक करने के उद्देश्य से कविताओं का सृजन किया। वे समाज के शुभचिन्तक है अत: उन्होंने अपनी व्यंग्य कविताओं की रचना करके समाज-सुधारक की भूमिका निभाई है। उन्होंने अपनी रचनाओं से मनुष्य को इंसानियत की ओर मोड़ने का भगीरथ प्रयास किया है। अत: वे समाज के हितैषी हैं। उनकी रचनाएँ संदेश-प्रधान हैं। उन्होंने गीतों के माध्यम से भी अद्वितीय व अनुपम कृतियों की रचना की, जिनमें पुन: उत्थानवाद की आवाज मुखरित होती है। वे सुसभ्य और सुसंस्कृत समाज-निर्माण की कामना करते हैं। इसलिए उन्होंने पारम्परिक हास्य को नई दिशा और अपनी व्यंग्य-चेतना से समाजोद्धार की प्रेरणा दी है। साथ ही राष्ट्रीय-हित पर बल दिया है। प्रत्येक नागरिक को देश व राष्ट्र के लिए समर्पित रहना आवश्यक है, यही भाव उनकी कविताओं में निहित है।

उनकी कविताओं में भावना प्रधान है किन्तु बुद्धि-तत्व सदैव सक्रिय रहा है। अत: उनकी रचनाओं में उनकी सूक्ष्म एवं पैनी दृष्टि देखने को मिलती है। उनकी साहित्यिक कृतियों में अलंकारों की भरमार नहीं है। उन्होंने अपनी कविताओं में सरल, मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है, कवि ने नए आलम्बनों का भी प्रयोग किया है।

चक्रधर जी कुशल समीक्षक भी हैं। मुक्तिबोध जैसे गम्भीर विषय पर लेखनी चलाना सहज कार्य नहीं। परन्तु उन्होंने मुक्तिबोध की कविताओं की व्यावहारिक समीक्षा एवं उसकी समीक्ष की भी समीक्षा की है। अपने शब्दों में सरलतापूर्वक किसी घटना को कहना कोई उनसे सीखे। उन्होंने मुक्तिबोध जैसे जटिल विषय को सरलता का रूप दिया है। उन्होंने मुक्तिबोध के सामाजिक व्यंग्य को पहचानने की चेष्टा की है एवं उनके संवेदनात्मक उद्देश्यों की खोज भी की है। मुक्तिबोध की काव्य-प्रक्रिया द्वारा इस सम्बन्ध में पहले किए गए कार्य में नयापन जोड़ा गया है।

उन्होंने छायावादोत्तर कविता के सन्दर्भ में भी अपने विचार व्यक्ति किए हैं। उन्होंने छायावाद से लेकर धूमिल तक की काव्य-यात्रा का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया है। सन् 1970 ई0 के बाद की कविताओं की द्वंद्वात्मक स्थितियों को पहचाना है। इस काल की कविताओं में जो प्रगतिवाद लुप्त हुआ था, वह पुन: सन् 1973-74 ई0 के बाद की कविताओं में वापस आया। इस काल की कविताओं में भूख, बेरोजगारी, महँगाई आदि असमानताओं को घुटन-निराशा के कारण न समझा जाने लगा, परन्तु उनसे संघर्ष कर जूझने की भावना मुखरित होने लगी। अर्थात् इन कविताओं में आशावाद और भविष्य के प्रति आस्था प्रतिपादित होने लगी।

चक्रधर जी हजारों मंचों पर कविताएँ सुनाने चढ़े और उतरे हैं। अत: मंचीय वातावरण का अनुभव उनसे अधिक और किसे हो सकता है। उन्होंने मंचों पर घटित अनेक घटनाओं की समीक्षा सरल एवं सहज माध्यम से ही की है। मंच-यात्रा के मध्य विभिन्न अनुभवों को संजोकर उन्होंने 'मंच-मचान' पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में वरिष्ठ कवियों जैसे-डॉ0 हरिवंशराय बच्चन, पं0 गोपालप्रसाद व्यास, श्री बलवीर सिंह 'रंग', श्री काका हाथरसी, श्री गोपादास 'नीरज', श्री मुकुटबिहारी 'सरोज', श्री भवानीप्रसाद मिश्र और श्री शरद जोशी से जुड़े विभिन्न प्रसंगों का वर्णन किया है। उनके निबन्ध मात्र संस्मरणात्मक नहीं हैं, उनमें कवि-सम्मेलनों के बहाने सामयिक-सांस्कृतिक परिवेश की जाँच भी की गयी है। इसमें वाचिक परम्परा के व्यतीत हो चुके, अतीत हो चुके किस्सों को वर्तमान तक पहुँचाने वाले ऐसे स्मृत्ति-लेख हैं, जिनमें मात्र स्मृत्ति नहीं अपितु भविष्य को जोड़ने वाले सूत्र भी हैं। डॉ0 रामदरश मिश्र ने इनके विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं- 'अशोक हिंदी की गम्भीर कविता-परम्परा के मर्मज्ञ पाठक हैं, विद्व ान हैं, प्रोफेसर हैं, अत: वे जब मंच-संचालन करते हैं, तब देख लेते हैं कि वे कैसे कवियों के बीच हैं और कैसा संचालन करना चाहिए। वे गम्भीर मंच का संचालन करते समय कवियों को उनके सही परिप्रेक्ष्य में, उनकी केन्द्रीय विशेषताओं के परिचय के साथ प्रस्तुत करते हैं।'

सन्दर्भ :

1. सन्दर्भ अशोक चक्रधर (पुस्तक) लेखक- डॉ0 गिरिराज शरण अग्रवाल, प्रकाशन-हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर

◆◆◆